वैश्विक जैव विविधिता पैटर्न

[स्रोत: द हिंदू]

नेचर इकोलॉजी एंड इवोल्यूशन में प्रकाशित एक वैश्विक अध्ययन से जैव-भौगोलिक क्षेत्रों में प्रजातियों के वितरण में एक **सार्वभौमिक पैटर्न का पता** चलता है, जो **वैश्विक जैव विविधिता संगठन** में **नई अंतर्दृष्टि प्रदान** करता है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष:

- **प्याज़-जैसी संरचना (Onion-like Structure):** उच्च समृद्धि और स्थानिकता वाले घने **कोर क्षेत्र**, धीरे-धीरे मध्यम विविधिता परतों से होते हुए **प्रजाति-विहीन बाहरी क्षेत्रों (Species-Poor Outer Zones)** में परिवर्तित होते हैं, जिनमें सामान्य प्रजातियों (आंतरिक प्रजातियों के उपसमूह) का प्रभुत्व होता है।
- **सार्वभौमिक पैटर्न: क्षेत्रीय अंतरों (जैसे, दक्षिण अमेरिका बनाम अफ्रीका)** के बावजूद, **विविध वर्ग (पक्षी, स्तनधारी, उभयचर)** की प्रजातियाँ एक सामान्य जैव-भौगोलिक संरचना का पालन करती हैं।
- **जलवायु निर्धारक: तापमान और वर्षा** 98% सटीकता के साथ प्रजातियों के वितरण का पूर्वानुमान लगाते हैं, जो **जलवायु और ऊँचाई जैसे पर्यावरणीय फिल्टर (Environmental Filters)** की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।

संरक्षण के लिये निहितार्थ:

- **दृष्टिकोण में बदलाव (Redefining Focus):** प्रशासनिक संरक्षित क्षेत्रों से आगे बढ़कर पारिस्थितिक गलियारों और जैव विविधिता केंद्रों की ओर बढ़ना, जो हिमालय जैसे जलवायु-संवेदनशील क्षेत्रों के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
- **आँकड़ों की कमी को दूर करना:** उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों, वैश्विक दक्षिण और कुछ प्रजातियों (जैसे, ड्रैगनफ्लाई, वृक्ष) का कम प्रतिनिधित्व भारत में अधिक क्षेत्र-विशिष्ट अध्ययनों की मांग करता है।
- **जलवायु-उत्तरदायी रणनीति: वर्षा और तापमान में परिवर्तन की निगरानी से अनुकूली संरक्षण योजना** को समर्थन मिल सकता है।

और पढ़ें: [भारत की समृद्ध जैवविविधिता]

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/global-biodiversity-pattern